61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 948 Participant Code: 106

ज़िंदगी ही नशा है

*) भूमिका
*) क्यों मनुष्य नशा के तलाश में आता है?
*) कब नशीली द्रव्य बने नशा का स्रोत।
*) जब शिक्षा से बच्चे को नशा न मिलते कब।
) → नैतिक मूल्य और नई शिक्षा नीति।
*) क्या कहानों से हमको नशा मिलेगा? और क्या सामाजिक माध्यम है, युवा का नशा?
*) असली नशा खोज करने में अभिभावकों का योगदान।
*) ज़िंदगी की नशा पहचान के लिए युवा के क्या-क्या चुनौतियाँ की ओर चाहिए?
*) विद्यार्थी होने के नाते मेरी कर्तव्य।

↳ भूमिका

"ज़िंदगी ही एक बड़ा नशा है। लेकिन नशीली द्रव्यों के उपयोग से इस बड़ी नशा बने ज़िंदगी को मत हटकरे या बिगाड़ चाहिए।"

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

आज हम एक प्रतियोगता की एक दुनिया में ज़िंदगी चलाता हैं। समाज में या ज़िंदगी मे एक समस्या का एक जंजीर यहाँ शामिल हैं। और इस परेशानी से मुक्ती पाने के लिए न इस नशीली दवाओं के गुलाम बने।

आज हमको इस सारी दुनिया में युवा नशा के लिए कई तरह के दुर्घटनाओं बने खतरनाक गतिविधियों में शामिल होते हैं। नशा ज़िंदगी के लिए एक अभिवाज्य घटक हैं, लेकिन ये मन भूलना है अच्छा नशा का स्रोत क्या हैं। युवा है इस राष्ट्र का नींव, लेकिन यही ही युवा है आज के अपराधों के में शामिल भी।

जन का इस विवेकहीन व्यवहार न जाने हमारे राष्ट्र को कहाँ कि ओर ले जाएगा? यह एक अजीब बात है आज हर व्यक्ती ने नशा के लिए कई स्रोत कि ओर पहचानकर चलते रहे हैं।

विश्व की खुशी की सूचकांक में भारत बहुत पीछा है। इसलिए इससे बहुत लोगों को नहीं ज़िंदगी का अर्थ अब भी लोगों को नहीं जानता है और यह का उत्तर हम लोग हरेक व्यक्ती का दायित्व भी है।

4 क्यों मनुष्य नशा के तलाश में आता है?

"नशा के लिए व्यक्तियों इसका स्रोत खोजकर चलता है। लेकिन अपना ही ज़िंदगी को देखो तो, मैं ही है, मेरा खुशी का स्रोत"

जब एक व्यक्ति ने अपना ही पसंद करेगा करता है, तब उनको इससे ही नशा मिलेगा। क्योंकि वो आप आपको ही समझकर, अपनी पसंद के अनुसार करते हैं। लेकिन जब एक व्यक्ति दूसरों की बातों के अनुसार, इसके पीछे चलता

है, तब इससे खुश पानना मुश्किल बने और वैसे खुश केलिए खोज करें।

आज हमारी दुनिया, पैसा कमाने केलिए भागा रहते है। और इस वक्त वो वो पैसे कमाने केलिए नए रास्ता खोजना है। क्योंकि इस समाज का सिद्धान्त यह ही है। लेकिन क्या पैसा से आनंद मिले? मनुष्य हर बार अपनी अभिलाषा सफल करने केलिए चलता है। लेकिन इस अंतहीन अभिलाषा के असर निराशा निराशा ही है।

"इसलिए समाज में लोगों को अपनी स्वाद या अभिरुचि के अनुसार जीने केलिए स्वतंत्रता होना चाहिए।"

4 कब नशीली दवा बने नशा का स्रोत।
आज हम नशी नशीली दवाओं के बात देखें तो इसके गुलामी बने युवा का ब संख्या ब में

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 946 Participant Code: 106

एक बड़ा वृद्धी हुई है। तीन वर्ष से तीन बार वृद्धी हुआ है, नशीली चीज़ों के उपयोग में। केरल में 2020 में 4 हज़ार से अधिक थी इसका उपयोग, लेकिन सितंबर तक 2022 में 16 हज़ार से अधिक बनी यह।

लेकिन क्यों नशा को उपयोग करता है? ज़िंदगी में कोई भी दिन दिया न सके खुश और परेशानी से मुक्ती इससे मिलता है। इस इतनी खतरनाक है की, इसका उपयोग लोग को मौत में आकर असर पडेगी। 10,000 से अधिक लोग इसका उपयोग करता है।

"युवा है राष्ट्र के नागरिक, वो है राष्ट्र का नींव, उनके पास है राष्ट्र के भ्रानी, लेकिन वो नशीली पदार्थों के गुलाम है, तो क्या बनेगा राष्ट्र का भविष्य?"

ये समझ लेना है, नशा से समस्यों से मुक्ती

(Note: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

नहीं मिलेगी। और अवबोध है यहाँ हमको अनिवार्य, जिसके से चलना चाहिए। नशीली चिज़ो समस्याओं का असर नहीं, संकट का अंत नहीं, दुख से मुक्ती नहीं होगी, सिर्फ ज़िंदगी में रुकना होगा।

" हमारा नई पीढ़ी, नशीली चीज़ों बेचनेवाले लोगों के जाल में फँसने केलिए नहीं होना चाहिए, बस नशीली दवाओं बेचनेवाले को कानून के जाल में फँस देने का होना चाहिए।"

जब शिक्षा से बच्चे को नशा न मिलता था।

सिर्फ 2021 में परिक्षा में हार होने के कारण आत्महत्या किए, न आयु के तहत बच्चों के संख्या 864 था। शिक्षा से बच्चे को परेशानी नहीं, बस जीने केलिए या

अच्छा ज़िंदगी बिताने केलिए सहाय चाहिए। शिक्षा से समग्र विकास होना चाहिए। अंक के अनुसार कोई एक बच्चे को विवरण नहीं करना चाहिए। डॉक्टर बनने केलिए नहीं अपनी जसबात के अनुसार एक अच्छा इंसान बनने केलिए प्रेरणा देना चाहिए। आज हमारा समाज में शिक्षा प्रणाली एक बेटे बच्चेके हुनर का विकास में भी ज़्यादा महत्व देना चाहिए।

बच्चे को अपनी मन पहचान करने केलिए अवसर देना है। बच्चे के हर बात केलिए 'नहीं' नहीं, उस बात को सुनकर अपनी पसंद को पालन करने में सहायता करना चाहिए। ज़िंदगी के इस नशा को महसूस करने केलिए अवसर देना चाहिए। आज दुनिया के कोने-कोने में ऐसे बेटे बेकारी और अपराधी युवा को भी कोई एक हुनर होगे लेकिन हालात और परेशानी होगे, इस अपराधी को अपराधी बने।

नैतिक मूल्य और नई शिक्षा नीती

आज कोतारी कम्मिशन द्वारा बने नई शिक्षा नीती में भी बच्चे को अपनी अनुसार, अपनी अभिरुची पहचानकर सीखने केलिए एक मौका दिया है। कला, खेल या पढ़ाई इसमे बच्चे को अपनी पसंद के अनुसार सीखने का अवसर यह देता है।

ज़िंदगी में नैतिक मूल्यों को अनिवार्य। दूसरी एक व्यक्ती को हम मदद किए तो हमको मिल सके खुशी है, इस दुनिया में एक बड़ा नशा। सहायकता, परोपकार, प्यार, करुण ये सब सीख देना मुशकिल है, लेकिन यह सब हमको महसूस कर सके। नैतिक मूल्य ज़िंदगी केलिए नई प्रतिक्षा और नई अर्थ देगी। यह नशा के बीज है। बच्चों को व्यक्तिगत विकास केलिए, सहजीवी प्रेमके साथ जीने के मौका शिक्षा से मिलना चाहिए।

"शिक्षा है अच्छे इंसान के शिल्पकारी"

शिक्षा को इतनी ताकत है की इसको आज समाज में सब शामिल, उस जटिल समस्या का भी उत्तर इसमें है। लेकिन इस शिक्षा सकारात्मक रूप पर होना चाहिए।

"१०० प्रतिशत साक्षरता वाले केरल में अपराध दर बहुत अधिक है और इसलिए अंक केलिए नहीं शिक्षा अच्छे इंसान के रूपधारण में असर पड़ना चाहिए, क्योंकि शिक्षा से भी हमको नशा मिलेगा।

(+)

क्या इन्सानों से हमको नशा मिलेगा?
और क्या सामाजिक माध्यम है, युवा का नशा?

अध्यापकों और अभिभावकों के बात पर नज़रअंदाज़। दिखाते बच्चे या युवा, सामाजिक माध्यम में दिखाने बात, क्या अच्छा या बुरा बने, इसको नकल करते हैं।

आज युवा को यह ऐसा लगता है कि, इन्सानों हम पालना है और कानून को नहीं। युवाओं के ज़िंदगी में सामाजिक माध्यम एक गहरा प्रभाव डालता है। "ब्लू वेयल" नामक मोबाईल खेल केलिए नष्ट हुआ। जीवन भी यहाँ है। आज खुशी का स्रोत वह बना है, किन्तु, इसको एक सकारात्मक पहलु भी है, लेकिन युवा ने इसमें मनोरंजन केलिए उपयोग करते अपनी मूल्यभूत समय को नष्ट करता है। अभिभावकों के साथ खर्च करके न मिले खुशी भी इस माध्यम से मिलता है। यह सचमुच में एक मूर्खता है। "कई बार लोग वास्तविकता को भूलता है" कहते है इस समाज सही नहीं, माँ-बाप पिछली पीढ़ी है, मुझे समझने केलिए कोई नहीं है। लेकिन, वो यह भूलता है कि अपनी खुशी की उत्तरदायित्व हमकेलिए है और शिकायत करना नहीं बजाये अपना संकट का उत्तर हम ही खोजना चाहिए। दूसरों को बात कर सके

लेकिन अपनी ज़िंदगी, हम ही जीना चाहिए। हमारा ज़िंदगी, हमारा कर्तव्य है, और दूसरों को हमारा कहानी बन जाना नहीं बन सके। ~~कहानों के पीछे~~

"कहानों को पीछे चलकर, नकल करके ज़िंदगी ~~बिता बिताते हैं~~ बिताते है। लेकिन इस नकल के बीच अपना ज़िंदगी जीने में वे भूलता है।"

लेकिन ऐसे बच्चे, कैसे इस ज़िंदगी बने नशा को समझ सके?

(*) असली नशा खोज करने में अभिभावकों का योगदान।

अब राष्ट्र में होते आते मामले में, अधिकांश अपराधों के पीछे युवा है। युवक एक ऐसा उम्र है, वहाँ बच्चे को निर्णयों लेने के ताकत नहीं है। इसलिए माँ-बाप बच्चों से ये ~~शिक्ष~~ सीख देना चाहिए की, "अच्छाई को पालने केलिए और बुराई को छोड़ने केलिए।"

अभिभावक बच्चों के साथ एक अच्छा दोस्त के तरह संभालना चाहिए। क्योंकि बच्चे पहले बार इस दुनिया को अपनी माँ-बाप के आँखों के सहारे देखता है। उनके लिए वो ही है उनका दुनिया है। युवा उम्र में वो अलोगों से दूर होना शुरू करता है लेकिन, और इस भी है, बच्चों लिए अच्छे रास्ते से विचलन में असर पड़ता है। पालन पोषण का अधिक और अधीन देना खतरनाक है। इसलिए पालन-पोषण में बहुत ही ध्यान रहना है।

"अच्छे अभिभावक ने ही बच्चों से ज़िंदगी क्या बनने केलिए नहीं, अपनी जरबात सफल करने केलिए सीख देना चाहिए।"

ज़िंदगी में बुराई को छोड़कर अपनी मन के अनुसार अच्छाई को अपनाने केलिए सीख देना चाहिए।

"उनकेलिए स्वतंत्रता के पंखों और आत्मविश्वास की जड़ें देना चाहिए।"

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

4) ज़िंदगी की नशा पहचान केलिए युवा के क्या-क्या चुनौतियाँ की उत्तर चाहिए?

4 बेरोज़गारी

केरल में डिसंबर महीने में 8.3%
की बेरोज़गारी दर हुआ।
प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार योजना, आनी एम" ये आदी बेरोज़गारी रोकने केलिए रहे योजनाएँ हैं।
अब यहाँ कई लोगों के साथ अच्छा शिक्षा है, लेकिन काम नहीं। दूसरी सबसे आबादी वाले हमारी भारत में युवा को काम नहीं।
अब भी भारत एक विकासशील राष्ट्र है विकसित नहीं। युवाने हमारे अस्त्र को अपनी हुनर के अनुसार यहाँ काम नहीं है। हमारे देश में दर्ज करते कई मामले के पीछे बेकारी युवा है।

नई शिक्षा नीति के अनुसार संभावित होना व्यवसायिक शिक्षा से पता लगाता है कि

एक अवसर हमको इस समस्या के लिए मिलेगा।

↳ मानसिक तनाव

यहाँ आज अपराधों के करने के पीछे और नशीली चीज़ों के अधीन के पीछे भी यह है। हमारा देश के अधिकांश लोग मानसिक रूप में असंतुलित है। किसी एक तरह के समस्या को चेहरा कर रहते हैं। इसके लिए कई तरीके में उन्हें के लिए सहाय चाहता है। अपना अभिरुची के अनुसार जीने के बजाय कुछ करने के कारण और इसमें हार होने के कारण इस हालत चेहरा करने का संभावना बढ़ती है।

↳ स्त्री के खिलाफ होते अपराधों

हमारा भारत सबसे बड़ा लोकतंत्र देश है और गणतंत्र भी है। लेकिन स्त्री शांती और सुरक्षा सूचिका में में 142 स्थान पर है हमारा भारत। यह बहुत उदास की बात है। यह शर्मी शर्म की

बात है कि, अपराध के शिकार बने महिला को जिंदगी की नशा जाना चाहिए। कोई अपराध के बिना एक अपराधी जैसे सीर-झुककर समाज पर जीने के हालत में कैसे एक महिला को नशा मिलेगा? लेकिन ये भी संभव है। हमारे सामने भी ऐसी महिलाओं ने असमानता के जंजीरें को तोड़कर महान बना है। लेकिन सभी इसकेलिए मानसिक सहाय को चाहते हैं।

विद्यार्थी होने के नाते मेरी कर्तव्य

"जैसे एक छोटा बीज को बड़ा पेड़ होने के ताकत है जैसे इस छोटा हाथों को बदलाव लाने का ताकत भी है" मैं, मेरा घरवालों को, गलिवालों को, मेरे दोस्तों को इस समाज को मेरी कोशिश से इस जिंदगी की नशा के बात समझा दूँगा। "कोई व्यक्ती से कहने के बेहतर है, मैं ये मुझे जिंदगी में अपनाकर उनलोगों को समझा दूँगा।"

अवसादों नहीं, नशीली दवाएँ नहीं, सामाजिक माध्यम भी नहीं, मैं हूँ मेरा नशा का जादू। मैं, मेरी अभिरुची के अनुसार जी करेगा और मैं इससे सफल बनकर इस समाज को अवबोध देंगे। लोग के लिए मानसिक संतुलन पाने के लिए मेरी वजह से मददगार देंगे। हमारे नई पीढ़ी बनने में, मेरा साथ, मेरा समाज की संतुष्ठ जिंदगी के लिए निस्वार्थ होकर काम करेंगे। मेरा कर्तव्य है यह, और मेरे जैसे हरेक के कर्तव्य है यह।

अवसदार

इस दुनिया में, स्वार्थी बनकर भागते मनुष्य अतित्य के लिए जीता है और इस अंतहीन यात्रा के अंत सिर्फ उदासलोगो। जिंदगी ही नशा है। जिंदगी में अतित्य सोचकर हम यह पल बिताने तो, नशा के लिए भागकर जिंदगी भी तोड़ जाएगा। इसलिए हम यह समझकर आगे बढ़ना चाहिए की यह पल, एक और भी बार नहीं मिलेगा और वैसे ही यह

जान एक और भी बार नहीं मिलेगा।

आगाना शौक किम, एक बार इस पल देखो,
इस प्रकृति को देखो, अपना दिल को देखो,
अपना बातों सुनो, पैसा नहीं नशा ~~मिलेगा~~ मिलेगा।

जय हिन्द, जय ~~हिन्द~~ हिन्दी।